सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजयख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, नवम्बर-दिसम्बर, 2016

यीशु मसीह तुम्हारे लिए जन्मा

क्रिसमस की खुशखबरी

'क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न होगा, हमें एक पुत्र दिया जायेगा, और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जायेगा।' (यशायाह 9:6)

एक बालक हमारे लिए उत्पन्न हुआ है। हमारे चारों ओर सारी प्रकृति, ऊपर रहनेवाले स्वर्गदूत और परमेश्वर के संत जो उन्हें जानते है, वे एक पुत्र की आस लगाए थे। जब एक राज्य, एक बालक का राजकीय परिवार में जन्म लेने का इंतजार कर रहा था, तो पूरा राज्य आनंद और विजय की आत्मा से भरा था क्योंकि एक प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी उत्पन्न हुआ था। नबी भी देख रहे थे कि समय पर विजयी होकर परमेश्वर का राज्य आ गया था। इब्री नबी कहता है 'प्रभुता उसके कांधे पर होगी' वह 'अद्भुत, युक्ति करनेवाला' होगा। सृष्टि यह अनुभव

यीशु मसीह... पृष्ठ 2 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

*हर **रविवारसुबह 7:30 से 8:00** बजे*

मरियम ने कहा, 'देख मैं तो प्रभु की दासी हूँ। तेरे वचन के अनुसार ही मेरे साथ हो।' (लूका 1:38)

क्रिसमस की वह पहली खबर मरियम के पास आयी। उस सुसमाचार ने यीशु की माँ, मरियम को आश्चर्य से विस्मित कर दिया। एक महान मुक्तिदाता आने वाला है जिस के आगमन की पवित्र वचन में नबूवत है। मरियम निश्चित रूप से उस प्रतिज्ञा के बारे में जानती थी कि वह छुड़ाने वाला, एक कुँवारी से जन्म लेगा। अपने आप को पूरी तरह से भूल कर, पवित्रता के सौंदर्य में, मरियम यकीन नहीं कर पायी कि वह परमेश्वर के पुत्र की माँ बननेवाली है। परमेश्वर की इस बात पर विश्वास करना मरियम को असंभव लगा कि युगों मे वही परमेश्वर की चुनी पात्र है।

उस खबर लानेवाले स्वर्ग दूत से उसने बड़ी सरलता और ईमानदारी से पूछा, 'यह कैसे हो सकता है, क्यों कि मैं तो कुंवारी ही हूँ?' ऐसा नहीं कि उसने परमेश्वर की बात पर भरोसा नहीं किया। मगर एक पल के लिए मानो परमेश्वर की प्रतिज्ञा उसकी नज़र से ओझल हो गयी। मरियम उस वरदान को भूल गयी कि यीशु एक कुंवारी को जन्म लेगा। एक पल के लिए स्वाभाविक तर्क उसने अपने मन में आने दिया।

पवित्रता से निखरा सौंदर्य ,

स्थायी सुन्दरता है। आजकल की सारी प्रसाधन सामग्री और बाह्य रूप उपचारों के बावजूद, लगभग सभी सौंदर्य रानियों की सुन्दरता की अवधि बहुत कम समय की रहती है। कितनी जल्दी उसकी सम्मोहकता गायब हो जाती है! मगर एक निर्मल मन वाली स्त्री और एक प्रार्थना करने वाली माँ, उनका सौंदर्य उमर के साथ बढ़ता है। उनके सफेद-बाल भी देखने में मनोहर लगते है।

मगर एक अशुद्ध अन्तरात्मा की यातना, हिम्मतवालों को भी चूर-चूर कर सकती है। और तुम्हारे मुँह पर झुर्री और शिकन उभरकर, तुम्हारी सुन्दरता को घृणित और नफरत करने लायक बना सकती है। इसलिए आजकल कई जवान अपनी असली उम्र से भी कई साल बड़ी उम्र के लगते हैं।

जब स्वर्गदूत मरियम के पास आया, वो मानो नीले आसमाँ से आये वज्रपात की तरह था, जो उसके सामान्य जीवन-गति को हिलाकर अस्थिर करने वाला था। फिर भी आनन्द भरी प्रत्याशा और समर्पण से उसने समाचार को स्वीकार किया। कालातीत शब्दों में उसने कहा, 'देख, मैं तो प्रभु की दासी हूँ।'

क्रिसमस एक बागी पापी के प्रति परमेश्वर के प्रेम की एक खूबसूरत कहानी है। क्रिसमस स्वर्ग से एक सांस की तरह हमारे पास आता है। सालाना फ़जूल

खरीदारी, बेरोक-टोक शराब पीना और पेटू की तरह खाना, यह सच्चाई से क्रिसमस मनाना बिलकुल नहीं है।

क्रिसमस , सारी मानव जाति के लिए एक जोरदार याद दिलाने वाला समय है। क्रिसमस हमें याद दिलाता है कि हम केवल जिन्दगी के समुन्दर में दिशाहीन इधर-उधर बहते रहने के लिए नहीं बनाये गये है। तुम्हारे लिए आज एक उद्धारकर्ता जन्मा है। 'किसे उद्धारकर्ता की जरूरत है? जो गुमराह है। जो आज इस ग्रह पर जी रहें है, हम से अधिक और कौन भटका होगा। आज हम अपने हाथों में ऐसे आत्म-संहार के शस्त्र लिये है, जो निश्चित रूप से एक हत्या कांड करेगा। ऐसा हत्या कांड कि न कोई पराजित या न कोई विजेता बचेगा।

क्रिसमस कथन का 'मूल', उद्धार कर्ता है। उनके बिना क्रिसमस का कोई अर्थ नहीं है। हो सकता है कि अतीत की उस मरियम की तरह हम भी जरा सी उलझन में हो। और हम सोच रहें हो कि इसका क्या मतलब होगा। क्या परमेश्वर मेरे लिए भी ऐसा आश्चर्यजनक कार्य करनेवाले है?

यह अविश्वसनीय लग रहा है , फिर भी आइये हम कहें, 'मुझे यकीन है, परमेश्वर मुझे धोखा नहीं देंगे। वह असंभव को भी मेरे लिए संभव करेंगे।'

हाँ , क्रिसमस कई असम्भव बातों को वास्तविक सच्चाईयों में बदलेगा। परमेश्वर के एक उद्धरकर्ता को भेजने की प्रतीज्ञा पूरी हुई; हर एक जो उस पर विश्वास रखता है, पाप से एक महान छुटकारा देखने वाला है।

क्रिसमस, स्वयं परमेश्वर को देह-धारण कर हमारे पास लाता है। ऐसे कितने साधू है जो निराश हुए है कि उनकी परमेश्वर की तत्पर खोज, सब व्यर्थ हुई। - उन्हें ऐसा लगा कि वे कभी भी उस 'सनातन' से मिल नहीं पायेंगे। ओह, यीशु को देखना कितना मनोहर। देहधारण किया परमेश्वर, परमेश्वर की पवित्रता, पीड़ित लोगों के प्रति परमेश्वर की कोमल करुणा - यह सब शरीर और लहू में रूपधारण करके, हमारे सामने है। पत्थर या सोने में नहीं, मगर मांस और लहू में।

लो वह आये और सामने खड़े हुए - निर्मल सुन्दरता, अद्वीतीय, सिद्ध - वह सब कुछ जो परमेश्वर में होना चाहिए, है! क्या तुम उन पर से अपनी नज़र हटा पाओगे? नहीं, तुम्हारा सारा ध्यान उन पर लगेगा। वह तब तक तुम्हें भर देंगे, जब तक कि तुम पुकार न उठो - 'यीशु ही मेरे लिए सब कुछ है। उनके बिना में जीवित नहीं रह सकता।' हाँ, सच्चा क्रिसमस यही है - यीशु का तुम्हारी जिन्दगी में आना।

- जोशुआ दानिएल।

यीशु मसीह.. पृष्ठ 1 से

करेगी। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है। जो बालक उत्पन्न होने वाला था वह पृथ्वी में किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति या किसी महान राजा से महान था। वह दूसरा आदम था जो पहले आदम की भांति धोखा नहीं खायेगा। जब यीशु पैदा हुआ, केवल स्वर्ग ने इस सबसे महान घटना को समझा था। प्रकृति इसे देख कर समझ रही थी और एक नया तारा आकाश में दिखाई दिया। और मजूसियों या ज्योतिषियों ने इसे समझा। नितान्त साधारण चारवाहों ने इसे समझा। पूरी सृष्टि इस महान घटना को देखने के लिए लालायित थी। 'क्योंकि हम जानते हैं कि सम्पूर्ण सृष्टि मिलकर प्रसव -पीड़ा से अभी तक कराहती और तड़पती है।' (रोमियों 8:22) पाप न केवल मानवता पर प्रभाव डालता है पर प्रकृति पर भी इसका असर पड़ता है। जब पाप आता है, पृथ्वी पर कांटे उगने लगते हैं (उत्पति 3:18) पृथ्वी के सबसे पहले परिवार में ही हत्या हुई। एक जवान ने अपने ही भाई को मार डाला। एक जानवर जो मनुष्य से मित्रवत् व्यवहार करता है वह विद्वेषी नहीं होता है। मनुष्य का हृदय खतरनाक तौर पर दुष्ट होता है जिसमें विषैले विचार उत्पन्न होते हैं जो कल्पनाओं को बिलकुल बुरा बना देता है। प्रकृति, मनुष्य की गुलाम है जो उसके लिए बहुत से कष्ट पैदा करता है। असमय वर्षा, बाढ़, तूफान, सूखा, फसलों का बर्बाद होना, भूकम्प और प्रकृति विपदा इत्यादि हैं।

संसार में राजा आया जो फिर से नया करेगा। वह शान्ति का राजकुमार है। कुछ खतरनाक शक्तियाँ हैं जो मानवता को बर्बाद करती हैं। वे इस संसार में शान्ति और सुरक्षा को कायम रहने नहीं देती है। पर यह राजा इन सभी शक्तियों पर अधिकार रखता है। वह समुद्र पर अपना अधिकार रखता है। वह गरजते हुए समुद्र को शान्त हो जाने की आज्ञा देता है। हवा और जल भी उसकी आज्ञा मानते हैं। शिष्यों ने पहली बार उनमें सर्वशक्तिमान

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBSMarg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

परमेश्वर को देखा। जब वे मृतकों में से जी उठे वे निश्चयपूर्वक स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु की भांति महीमान्वित हुए। वे न केवल गरजते हुए समुद्र को बल्कि दिल के संघर्षों को शांति में बदल सकते हैं जो हमारी समझ से परे है। केवल वे जो उन पर विश्वास करते हैं वही केवल उस नये जन्में बालक के आलौकिक होने और दिव्य शक्ति होने पर विश्वास करते हैं। संसार और यहां के दार्शनिक, शान्ति की खोज कर रहे हैं। यहां शान्ति का राजकुमार आया है जो मानव स्वभाव को स्पर्श कर सकता है और उसे दैविक स्वभाव में बदल सकता है। मानव जाति का पाप क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया गया है और जी उठने की शक्ति के द्वारा मृत्यु और कब्र की शक्ति को निरस्त कर दिया है।

'मैं उन्हें अधोलोक के हाथ से छुड़ा लूंगा, मैं उन्हें मृत्यु से छुटकारा दूंगा। हे मृत्यु, तेरे मारने की शक्ति कहां रही? हे अधोलोक, तेरा डंक कहां? मेरी दृष्टि से करूणा ओझल हो जाएगी। (होशे 13:14)

केवल वही लोग जो आत्मा में जन्में हैं, वही प्रभु के जन्म की घटना के महत्व को समझ सकते हैं। सारी सृष्टि के राजा को एक पुत्र जन्मा है। हमारी तरह ही उसकी परीक्षा हुई पर उन्होंने हमेशा पाप के ऊपर विजय पाई। 'क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमसे सहानुभूति न रख सके। वह तो सब बातों में हमारे ही समान परखा गया, फिर भी निष्पाप निकला।' (इब्रानियों 4:15) उसने इस विशेषाधिकार को सिद्ध किया जो पहले आदम को दिया गया कि बुराई पर विजय हांसिल करे। हर प्रकार की परीक्षा होने के बावजूद वे बिना पाप के रहे। मानव जाति के पाप को अपने ऊपर लिया। वे इसे कब्र में ले गये और वहां गाड़ दिया। और उन्होंने अपने आप को राजा साबित किया। प्रकृति ने भी इसे मान लिया। जब वे क्रूस पर चढ़ाये गये। धरती भी कांप उठी और सूर्य भी अंधकारमय हो गया। कब्र ने कुछ संतों को मुक्त कर दिया वे लोगों को दिखाई दिये। वे पृथ्वी पर एक राजा की तरह चले। मृत्यु ने आत्मसमर्पण कर दिया, मुर्दे जी उठे। कब्र ने लाजर को दे दिया जब उसे पुकारा गया, 'हे लाजर, निकल आ।' लाजर जीवित होकर निकल आया। और सबसे बढ़कर यह कि कई पापी पुरूष और स्त्रियां जो पाप में मरे हुए थे उनका मन परिवर्त्तन हुआ। कुछ स्थानों में जैसे सूखार की सामरी स्त्री मिशनरी बन गई। वे राजा बने जो मानव के भ्रष्ट स्वभाव को बदल कर उसे उसके मूल स्थिति में पहुंचा दिया। यीशु का नाम अधोलोक को कंपा देता है। शैतान और उसके दूतों ने संसार को बुरी तरह से प्रभावित किया है मानव के दिमाग को कुतर्कपूर्ण और बहकाने वाले दर्शन से भर दिया है। मानव ने उद्धार के मार्ग को खो दिया है। जब मानव ने मूर्तिपूजा करनी शुरू की, ये बुरी अशुद्ध आत्माएँ मूर्ति में प्रवेश करतीं हैं और सृष्टि में पुरुषों और स्त्रियों को भ्रमित करतीं हैं और सत्य को जानने से इंकार करवाती है। यह मूर्तिपूजा भ्रष्ट मानव का स्वभाव बिगाड़ देती है। उनके कहे जाने वाले अवतार लोगों की कल्पना मात्र हैं। लोग इन अवतारों में पापमय जीवन को पाते हैं। पर इस यीशु में दो हजार वर्ष बीत जाने पर भी उनको हम निष्पाप ही पाते हैं और कोई भी उनमें किसी प्रकार की अशुद्धता, पाप और स्वार्थीपन को उनके मत्थे पर नहीं मढ़ सकता है। वह देवता हैं जिन्होंने हमारी बिमारी और दुख को अपने ऊपर ले लिया। हमारी बिमारियां और दुख उनमें घाव उत्पन्न किये फिर भी उन्होंने सहर्ष अपना जीवन मानव जाति के लिए दे दिया। यीशु अपने चरित्र के गुणों के कारण पृथ्वी और स्वर्ग में सर्वोच्च सिद्ध हुए। कोई भी उन्हें राजगद्दी से उतार नहीं सकता है और जो इस महान उद्धारकर्ता का अनुगमन करते हैं वे इस सर्वोच्चता के हिस्सेदार हो जाते हैं। वे सर्वोच्च होते हैं न कि किसी मानव की सहायता से, न ही देशभक्ति की भावना से बल्कि शुद्ध गुणों से जो मानवता के सबसे ऊंची जगह से मिलती है। कब्र का उस पर कोई अधिकार नहीं है। उनमें मृत्यु का भय नहीं है - यीशु मसीह हर एक भय को शान्त कर देता है। वे तारे की तरह होंगे जो परमेश्वर के राज्य में आकाश की तरह चमकेंगे।

'उसकी प्रभुता की बढ़ती का और उसकी शांति का अंत न होगा। वह दाऊद की राजगद्दी और उसके राज्य को उस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धार्मिकता के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन इसे पूरा करेगी।' (यशायाह 9:7) 'तब यिशै के ठूंठ में से एक अंकुर फूट निकलेगा, हां, उसकी जड़ में से एक शाखा निकलकर फलवन्त होगी। तब यहोवा का आत्मा, बुद्धि और समझ का आत्मा, युक्ति और पराक्रम का आत्मा वरन् ज्ञान और यहोवा के भय का आत्मा उस पर छाया रहेगा।' वह अब्राहम के परिवार से आयेगा। परमेश्वर की प्रतिज्ञा कि संसार के सभी राष्ट्र उसके द्वारा आशिष पायेंगे। यह प्रतिज्ञा पूरी हुई। 'वह न तो मुंह देखा न्याय करेगा और न कानों से सुनकर निर्णय लेगा।' संसार के सभी दार्शनिक यीशु के सामने बौने दिखते हैं। यीशु जो प्रचार करते थे उसे जीते थे। उनका दर्शन उनके पवित्र जीवन से प्रगट होता है। संसार चाहता है कि दर्शन साकार रूप में प्रगट हो और वही ख्रीष्ट के व्यक्तित्व से हमें देखने को मिला। मानवीय शरीर में परमेश्वर का स्वरूप हम अपने में देख सकते हैं। हम क्रूस पर यीशु का विर्दीण और लहू बहते हुए हृदय को देख सकते है जो हृदय-मानव के पाप के कारण तोड़ा गया। अंत में हम यीशु ख्रीष्ट को सभी राज्यों और शक्तियों के ऊपर स्वर्ग पर विराजमान देखते हैं। उनके

अधिकार पर कोई सवाल नहीं उठा सकता। क्या यह महान और अद्वितीय उद्धारकर्ता हमारे सारे अस्तित्व का निर्विवाद या मान्य प्रभु है?
- श्रीमान एन. दानियेल।

अपने प्राण को खो दे

तीन हफ्तों से , युवा मेरी को अपनी सहेली जेन से बात करने की अनुमति ना थी। जेन उसे बाइबल की कहानियाँ सुनाया करती थी। मगर मेरी के माता-पिता ने बेटी को अपने धर्म के लिए समर्पित किया था। तथापि एक शुक्रवार मेरी एक बड़ी गली से गुज़र रही थी। फुटपाथ पर एक सफेद कागज का टुकड़ा पड़ा हुआ था। पहले तो उसने नज़रअंदाज किया मगर जब वह गोदाम पहुँच गयी जहाँ के लिए वह निकली थी; मन में कुछ आग्रह कर रहा था, वापस जाकर उस कागज़ को उठाओ। जब वहाँ लौटी तो पाया कि वह एक छोटा सा कार्ड है। उस कार्ड की एक तरफ ये शब्द लिखे थे: "यदि मनुष्य सारे जगत को पा ले और अपने प्राण को खो दे तो उसे क्या लाभ? "

मेरी ने कार्ड पर लिखे इन शब्दों को कई बार पढ़ा। मगर कभी बाइबल नहीं पढ़ी थी, इस कारण इन शब्दों का मतलब उसे मालूम ना पड़ा। अंततः उसने अपने आप से कहा: "जेन मुझे इसका मतलब बता सकती है," और दो मील दूर जेन को मिलने गयी।

बड़ी बेचैनी के साथ जेन के कमरे में घुसते हुए उस कार्ड को दिखाते उसने पूछा, "इसका क्या मतलब है?" जेन कार्ड पढ़कर जवाब दिया , "जो लिखा है वही उसका मतलब है: यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त कर ले, और अपने प्राण खो दे तो उसे क्या लाभ?" और बहुत सरल तरीके, जेन ने उस अंश का मतलब समझाया।

"किसने यह कहा है?" हड़बड़ी से मेरी ने पूछा। "प्रभु यीशु मसीह ने खुद अपने ही शब्दों में कहा था," जेन ने उत्तर दिया।

लड़की के हाथों से उस कार्ड को छीनते हुए मेरी बहुत विक्षिप्त सी उस घर से निकल गयी। उसकी हालत और जल्दबाजी से व्याकुल हो उठी जेन कुछ समय बाद उसके पीछे-पीछे गई। घर के दरवाज़े पर मेरी की माँ से उसकी मुलाकात हुई और उसने पूछा कि उनकी बेटी कैसी है और वह उससे मिलना चाहती है।

"ओह जरूर," मेरी की माँ ने उत्तर दिया, "वो एक आजीब प्राणी है; अजीब हरकतें कर रही है - मानो दुष्ट आत्मा उस पर हावी हो वह अपने कमरे में आगे-पीछे चल रही है। मुझे नहीं लगता वह किसी से मिलने की हालत में है," और मुड़कर घर के अंदर चली गयी।

कुछ समय बाद , एक रविवार शाम जेन ने यह बात अपनी मसीही शिक्षिका के साथ बाँटी, "मुझे यकीन है वह पागल हो रही है;" उसने कहा, "जरूर प्रार्थना कीजिए की प्रभु उसके दिमागी सन्तुलन को बनाये रखे।"

मंगलवार सुबह , उस मसीही शिक्षिका को जेन से एक खत मिला, जिस में लिखा हुआ था: "प्रभु की स्तुति हो! मेरी ने मन फिराया। ऐसा हुआ कि जब वह शुक्रवार मेरे यहाँ से जाने के बाद पूरी शाम पागल की तरह अपने कमरे में आगे-पीछे चलती रही। उसके माता-पिता ना जानते हुए कि उसके साथ क्या करे, बहुत मुश्किल हालत में थे। घोर व्यथा में बिना आराम किए वो रातभर कमरे में आगे पीछे चक्कर लगाती रही। खुद उसके शब्दों में, "जिधर भी देखूं वही भयानक शब्द बड़े-बड़े अक्षरों में लिखे दिखाई पड़ रहें थे, "अपने प्राण को खो दो! अपने प्राण को खो दो!' छत, दीवारें, फर्श; हाँ, मेरे हाथों पर भी वही शब्द। मैं पागलपन के कगार पर थी। मैं ने यह महसूस किया था। मैं न तो सोने का साहस कर पायी, ना बत्ती बंद करने का।

"'अगले दिन सुबह फीकी, कमजोर दिखते हुए वह नीचे आई।" 'मेरे पिताजी ने होने वाले पार्टी की याद दिलाई। दुबारा जल्दी आराम लेने की अनुमति लेकर मैं अपने कमरे में चली गयी। दरवाजा बन्द करते ही दुबारा वहीं अक्षर "अपने प्राण को खो दो" यह कोई कल्पना ना थी कि मोटे-मोटे अक्षर मेरे सामने खड़े हैं। पिछली रात की तरह ही ये रात भी मैंने अपने कमरे का चक्कर काटते बिताई। अब दुबारा मैं ने प्रार्थना करने की कोशिश की, मगर मेरे पास इनके अलावा दूसरे शब्द ना थे, "प्रभु मेरी मदद करो।" "

"अगले दिन मेरे पिताजी बहुत नाराज़ थे क्योंकि मैं अब भी बहुत बीमार और व्याकुल दिख रही थी, और कहा कि मुझे डॉक्टर के पास जाना चाहिए।" "अगर कल तक ठीक महसूस नहीं किया तो जाऊँगी," मैं ने कहा। ग्यारह बजे मेरे माता-पिता की मेरे कमरे से गुज़रने की आवाज़ आई। और तभी मुझे याद आया कि 'नाना' जो एक वृद्ध नर्स थी, एक पुराना फटा बाइबल पीछे छोड़ गयी थी। उसे तहखाने में कही फेंक दिया गया था। तुरंत मन में विचार आया कि मुझे उसे खोज निकालना चाहिए। पुरानी चीजों के ढेर में से मैं ने उसे ढूंढ निकाला। उसे ऊपर

सत्य की परख!

'हम पर ऊपर से सूर्योदय का प्रकाश चमकेगा, अर्थात उन पर जो अन्धकार और मृत्यु की छाया में बैठे हैं, कि हमारे पैरों की अगुवाई शान्ति के मार्ग पर करे।' (लूका 1:78-79)

आई और अपने कमरे को बन्द किया। बिस्तर पर लेटे मैं ने परमेश्वर से माँगा कि वह मुझे अपने उस वाक्य को दिखाये। उस किताब को खोलते ही, इन शब्दों पर मेरा नजर पड़ी, ''क्यों कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।' (यूहन्ना 3:16)''

''मुझे बहुत निराशा हुई; मुझे अपेक्षा थी कि जब मैं ने परमेश्वर से अपने वचन को दिखाने के लिए माँगा था तो मैं उस वचन को देखूंगी। उस किताब को बन्द करके दुबारा खोला तो फिर उसी जगह पर। अब बेताब हो उस किताब को बन्द करते, मैं ने परमेश्वर को पुकारा कि वह मुझे मेरा उस वचन दिखायें। और दुबारा वही वचन। और इस दफा यह कोई कल्पना नहीं: और वह बत्ती की रोशनी भी नहीं है जो उस पन्ने पर पड़ रही थी। मगर आज मुझे सबकुछ साफ-साफ दिखाई दिया - परमेश्वर ने प्रेम किया, परमेश्वर ने दिया, मुझे विश्वास करना है और वह मेरे लिए अनन्त जीवन है। फूलें ना समाकर मैं सिर्फ चिल्ला उठी, जिस से मेरे माता पिता मेरे कमरे में आये। जब उन्हें सारा समझ में आया तो मुझे डाँटा और धमकी दी। पिताजी उस किताब को जलाने के लिए ले गये और माँ रो रही थी। मगर मैं बहुत खुश थी। अगले दिन मेरा चहरा फीका ना था। मैं बहुत शान्त महसूस कर रही थी। आप स्वयं न जानो तो नहीं समझ पाओगे। मैं इसका आपको वर्णन नहीं दे पाऊँगी।''

मेरी के साथ परमेश्वर ने कैसे व्यवहार किया ये सुनकर उस सन्डे स्कूल की शिक्षिका ने आश्चर्य किया और स्तुति की। एक नन्ही आत्मा जो हर तरह के मानवीय मदद से वंचित थी, मगर जिससे परमेश्वर मिले और स्वयं उसे सिखाया।

'मेरे पास आओ ... मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।' - यीशु

- है. पिकरिंग, 100 थ्रिलिंग टेलस।

परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं

पूर्व जर्मनी में यात्रा के दौरान, सभा के बाद एक औरत मुझ से मिलने के लिए इन्तजार कर रही थी। उसे मुझसे बात करना ज़रूरी लगा। यह उसकी अद्भुत कहानी है। पिछले साल वह मेरा संदेश सुनने के लिए आई थी। जाहिर तौर पर उस वक्त मैंने प्रचार किया था कि हर एक को अपनी शब्दावली से 'असंभव' शब्द को निकाल देना चाहिए। वह इसलिए कि परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। और ये शब्द उसके दिल को छू गए क्योंकि वह किसी बात को लेकर बहुत दुःखित थी। उसके स्तनों में दूध नहीं था इसलिए अपने नन्हे शिशु को वह दूध नहीं पिला पा रही थी। अपने बच्चे को दूध पिलाने में असमर्थ वह गहरे दुःख से, घर वापस लौट आई। मगर सुनी हुई बातों पर वह मन में विचार कर रही थी। 'परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है।' यह वचन उसके मन में गूजने लगा। क्या यह वचन उस के विषय में सच साबित होंगे? अपने बच्चे को गोद में लेकर वह स्तनपान कराने लगी। और देखो, प्रभु ने अपने अद्भुत स्पर्श से, लम्बे समय तक बिलकुल सूखे स्तन ग्रथियों को उसी समय से, उस शिशु के लिए पर्याप्त दूध उत्पन्न करने का अद्भुत कार्य किया। बेशक इस घटना को सुनकर और उस माँ की खुशी को देखकर, मेरा दिल रोमांचित हो गया।

- जोशुआ दानिएल।

इन्तजार: प्रार्थना का यह उत्तर

नवंबर का महीना था , एक औरत अपने वृद्ध पिता और दो छोटी बेटियों को साथ लिए सफर कर रही थी।

'गुरूवार सुबह, हम न्यू हाम्पशायर से रवाना हो गये थे। शनिवार रात तक इन्डियाना पार करने के लिए काफी समय है, इस बात की आशा थी। मगर अगले दिन, सेंट लॉरेन्स नदी पार करने के बाद हमारी रेलगाड़ी दो घंटों के लिए रुक गई थी। मुझे चिंता होने लगी क्योंकि मुझे मालूम था हमारे पास सीमित पैसे होने के कारण हम ज्यादा देर रास्ते में रूक नहीं पायेंगे। गाड़ी दुबारा चलने पड़ने पर मैं ने कन्डक्टर से पूछा कि हम किस समय तक टोलींडो पहुँचेंगे। मुझे डर था कि अगली गाड़ी को पकडने के लिए हम समय पर नहीं पहुँच पायेंगे। उन्होंने बताया कि गवाएँ समय को हाँसिल कर समय पर पहुँचना मुश्किल है।

जल्द ही कन्डक्टर बदल गये और नए कंडक्टर से दुबारा मैं ने वही जानने की कोशिश की और मुझे वही जवाब मिला। फिर भी मैं डेट्राइट नदी पहुँचने तक आशा करती रही। वहाँ मुझे पता चला कि गाड़ी को और तेज चलाने के हर संभव प्रयास के बावजूद, हम अब एक घंटा देरी से पहुँचेंगे। इसलिए हमे उस स्थान पर रविवार रात तक रुकना पड़ेगा।

'डिब्बे में दूसरी तरफ बैठ जाने के बाद मैं ने कन्डक्टर से पूछने का प्रयास किया कि क्या हम समय पर पहुँच पायेंगे कि हम अगली गाडी को पकड़ सकें। उसने तुरन्त जवाब दिया, 'नहीं साहिबा, वो असंभव है। अगर कोई और गाड़ी होती तो शायद हम आशा कर पाते कि वह थोड़ा इन्तजार करेगा। मगर वो गाड़ी? - कभी नहीं! वह कंडक्टर बहुत अनुशासन से चलने वाला है। अपने नीयत समय के बाद, , एक मिनट तो बहुत दूर की बात है, उसने कभी भी एक पल की भी देरी नहीं की है। तब मैं ने पूछा कि क्या हम रात डिपो में ठहरकर बिता सकते है। उसने कहा: नहीं; आप सब ठंड के मारे मर जाओगे, क्यों की रविवार की शाम तक आग बुझी रहेगी और डिपो ठंडा रहेगा।

गाड़ी में आगे बैठे एक सज्जन ने कहा कि वह हमें एक अच्छा नजदीकी

होटल दिखा सकते हैं, जिसके बारे में वो परिचित है। उसे शुक्रिया अदा किया, पर मैं पीछे बैठ गयी। हाथों से अपने आँखों को छिपाते, प्रभु की ओर अपने दिल की आस लगाते मैं ने कहाः ' हे परमेश्वर, अगर आप मेरे पिता हो, और मैं आपकी बेटी, उस कन्डक्टर के दिल में ये बात डालिए कि वो हमारे पहुँचने तक इन्तजार करे।'

जल्दी मेरा मन शान्त हो गया और आँख लग गई, मुझे आभास न था कि परमेश्वर मेरी दीन प्रार्थना का उत्तर देने वाले हैं। मगर जब हम टोलीडो नगर पहुँचे, हम सब को चकित करते, अगली गाड़ी का कन्डक्टर वहाँ खड़ा था। उसके इन्तजार करने का कारण जानने के लिए बेताब हमारे कन्डक्टर ने उसे बताया कि एक महिला और उसका अपाहिज पिता और दो नन्ही बेटियाँ है जिसे उस गाड़ी में चढ़ना है।

जल्दी सब रेलगाड़ी से उतरे , दोनों कन्डक्टर अपने लालटेन ले आये और उस दूसरी गाड़ी में चढ़ने के लिए मेरे पिताजी की मदद भी की। वहाँ डिब्बे के दरवाजा को ताला लगाने के कारण हमारे लिए बैठने का स्थान भी आरक्षित था। सब कुछ हड़बडी में हो रहा है। मुझे सब कुछ उलझा सा लग रहा था। मेरी आँखे तो मेरे पिताजी पर टिकी हुई थीं कि कही वे गिर ना पड़ें क्योंकि वहाँ बहुत फिसलन थी। यात्रा-सामान के अधिकारी ने पूछा, 'मैडम, आपकी टिकटें!' सारी टिकटें उनके हाथों में रख मैं गाड़ी में चढ़ गई थी और मेरे सीट पर बैठने से पहले ही गाड़ी निकल पड़ी। और मेरे पास यात्रा-समान की कोई टिकट नहीं थी। दुबारा मैं पुकार उठी: 'हे प्रभु जो प्रार्थना सुनते हो, तुम ही मेरे सामान को संभालो।' उस कन्डक्टर को रोककर रखने वाले यह भी करेंगे, मुझे यह विश्वास था। कुछ ही पलों में उस कन्डक्टर ने मुस्कराते हुए आकर कहा, 'मैडम, मैंने पूरा आधा घंटा आपके लिए इन्तजार किया। जो मैं ने कन्डक्टर बनने के बाद कभी ऐसा न किया था, मैंने समय से एक मिनट की देरी भी कभी नहीं की।' उन्होंने कहा, 'अब मैं जानता हूँ कि वो आपके पिताजी ही थे जिनके लिए मैं ने इन्तजार किया, क्योंकि गाड़ी में और कोई दूसरी बात ही ना थी जिसके लिए मैं रुकता।' मैंने धीमे से कहा, 'प्रभु की स्तुति हो!' अपने आप ये शब्द मेरे मुँह से बाहर आये। फिर उन्होंने कहा, 'उस समय सब चढ़ चुके थे, और मैं निकलने को तैयार था, मगर जो पहले कभी नहीं हुआ, कुछ अजीब भाव मेरे मन में उठा, मैं निकल नहीं पाया। कोई मुझ से कह रहा था, तुम्हें इन्तजार करना है; गाड़ी में कुछ काम बाकी है, तुम्हें इन्तजार करना होगा। मैं ने इन्तजार किया और अब आप सब लोग यहाँ हो, सुरक्षित।' दुबारा मेरे दिल ने कहा, 'प्रभु की स्तुति हो!' वह आगे जाने लगा, तब मैं ने कहाः 'मगर एक और बात है।' 'वह क्या है?' उसने तुरन्त कहा। 'मैं ने अपनी सारी टिकटें यात्रा-सामान अधिकारी को दे दिये और मेरे पास कुछ नहीं बचा है।' 'उसके क्या अंक है?' मैं ने बता दिया। 'वो सब मेरे पास हैं।' मेरे हाथ में देते, उन्होंने कहा, 'मगर आपका सामान सोमवार सुबह से पहले नहीं पहुँचा पायेंगे। हम काफी इन्तजार कर चुके थे। इसलिए उनको चढ़ाने का समय ना था।'

- एस.बी शा, 'टॅचिंग इन्सीडेनट्स एन्ड रिमार्कबुल आन्सर्स टू प्रेयर्स' से चुनी हुई।

यीशु के धन्य वचन!

मत्ति (5:3-12)

3 धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

4 धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे।

5 धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

6 धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।

7 धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।

8 धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

9 धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।

10 धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

11 धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हरो विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें।

12 आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था।।